https://www.developindiagroup.co.in/

जे.पी.एस.सी.

झारखण्ड सिविल सेवा
मुख्य परीक्षा 2024

पूर्णतः संशोधित एवं अद्यतन

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र – II

Prepared by
Develop India Group

अनुक्रमणिका

हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखन	7	प्रयोजनमूलक हिन्दी के अवरोध	30
नया युग	8	अखबारी हिंदी	30
आधुनिक काल	8	जन संचार माध्यम	31
स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी	8	हिन्दी व्याकरण	31
इंटरनेट युग में हिन्दी	8	अध्याय–1	31
हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल	8	1. भाषा, व्याकरण और बोली	31
आदिकाल (743 ई से 1344 ई)	9	व्याकरण	31
भक्तिकाल (1343 से 1643 ई.)	9	भाषा और व्याकरण का संबंध	31
रीतिकाल (1643 से 1843 ई.)	10	बोली	31
आधुनिक काल (1843 से अब तक)	10	लिपि	31
आधुनिक हिंदी पद्य का इतिहास	11	साहित्य	32
भारतेंदु हरिश्चंद्र युग की कविता (१८५०–१९००)	11	अध्याय–2	32
पं महावीर प्रसाद द्विवेदी युग की कविता (१९००–१९२०)	11	वर्ण–विचार	32
छायावादी युग की कविता (१९२०–1936)	12	वर्णमाला	32
आधुनिक हिंदी गद्य का इतिहास	13	1. स्वर	32
उन्नीसवीं शताब्दी	15	मात्राएँ	32
बीसवीं शताब्दी	15	व्यंजन	32
हिन्दी एवं उसके साहित्य का इतिहास	17	अनुस्वार	33
हिंदी भाषा का विकास	18	विसर्ग	33
भारत में 4 भाषा – परिवार	18	चंद्रबिंदु	33
अपभ्रंश	18	हलंत	33
अवहट्ट भाषा	19	अध्याय–3	33
देवनागरी लिपि	19	शब्द–विचार	33
हिन्दी भाषा की लिपि के रूप में विकास	19	शब्द–भेद	33
देवनागरी लिपि के गुण	22	उत्पत्ति के आधार पर शब्द–भेद	33
देवनागरी लिपि के दोष	22	प्रयोग के आधार पर शब्द–भेद	34
देवनागरी लिपि में किए गए सुधार	22	अर्थ की दृष्टि से शब्द–भेद	34
शब्दशक्ति	23	अध्याय–4	34
काव्यशास्त्र	24	पद–विचार	34
काव्य–सम्प्रदाय	27	अध्याय 5	35
काव्य में शब्द–शक्तियों का प्रयोग	27	संज्ञा के विकारक तत्व	35
प्रयोजनमूलक हिन्दी	28	पुल्लिंग की पहचान	36
प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएं	29	स्त्रीलिंग की पहचान	36

Develop India Group

शब्दों का लिंग–परिवर्तन	36	उपसर्ग	50
अध्याय 6	37	अध्याय 18	51
वचन	37	प्रत्यय	51
अध्याय 7	39	अध्याय 19	53
कारक	39	संधि	53
अध्याय 8	40	अध्याय 20	55
सर्वनाम	40	समास	55
अध्याय 9	41	समास के भेद	55
विशेषण	41	अध्याय 21	57
विशेषण की अवस्थाएँ	42	पद–परिचय	57
अवस्थाओं के रूप	43	अध्याय 22	57
विशेषणों की रचना	43	शब्द–ज्ञान	57
(2) सर्वनाम से विशेषण बनाना	44	अध्याय 23	65
(3) क्रिया से विशेषण बनाना	44	अध्याय 24	66
अध्याय 10	44	वाक्य–प्रकरण	66
क्रिया	44	वाक्य–भेद	67
धातु	44	वाक्य–परिवर्तन	68
अपूर्ण क्रिया	45	2. संयुक्त वाक्यों का साधारण वाक्यों में परिवर्तन	68
अध्याय 11	45	वाक्य–विश्लेषण	68
काल	45	अध्याय 25	69
1. भूतकाल	45	अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध वाक्य	69
2. वर्तमान काल	46	अध्याय 26	70
अध्याय 12	46	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	70
वाच्य	46	कुछ प्रचलित मुहावरे	70
प्रयोग	47	कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ	73
वाच्य परिवर्तन	47	आदिकाल	76
2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना	47	भक्तिकाल	76
अध्याय 13	48	मध्ययुग	76
क्रिया–विशेषण	48	रीतिकाल	77
अध्याय 14	48	आधुनिक काल	77
संबंधबोधक अव्यय	48	सत्याग्रह एवं असहयोग आंदोलन	77
क्रिया–विशेषण और संबंधबोधक अव्यय में अंतर	48	आधुनिक साहित्य की दिशा	77
अध्याय 15	48	छायावाद	77
समुच्चयबोधक अव्यय	48	क्या है छायावाद?	77
अध्याय 16	49	छायावाद शब्द का प्रयोग	78
विस्मयादिबोधक अव्यय	49	समाज का अन्तर्विरोध	78
अध्याय 17	49	मुख्य कवि	79
शब्द–रचना	49	परिभाषाएँ	79

Develop India Group

रचनाएँ 80
प्रकृति चित्रण 81
प्रसाद की कामायनी 81
प्रेमगीतात्मक प्रवृत्ति 81
काव्य शैली की विशेषता 82
हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद 82
हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का उदय 83
प्रगतिवादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ 84
प्रयोगवाद 86
नयी कविता 87
गद्य का उद्भव एवं विकास 90
१९वीं सदी से पहले का हिन्दी गद्य 90
भारतेंदु पूर्व युग 90
भारतेंदु युग 90
द्विवेदी युग 91
रामचंद्र शुक्ल एवं प्रेमचंद युग 91
अद्यतन काल 91
कहानी 92
हिंदी उपन्यास 93
हिंदी के प्रारंभिक उपन्यास 93
एकांकी 94
भारतेन्दु–द्विवेदी युग 95
प्रसाद–युग 96
प्रसादोत्तर–युग 98
स्वातंत्र्योत्तर युग 101
आलोचना 103
आलोचना का कार्य 103
प्रकार 103
निर्णयात्मक आलोचना 104
प्रभावाभिव्यंजक आलोचना 104
व्याख्यात्मक 104
प्रगतिवादी आलोचना 104
आलोचला का उद्देश्य 104
अच्छे आलोचक के गुण 104
निबन्ध 105
निबंध की विशेषता 105
हिन्दी साहित्य में निबन्ध 105
संस्मरण 106
हिन्दी संस्मरण का इतिहास 106
आरंभिक युग 106
द्विवेदी युग 106
छायावादोत्तर युग 106
स्वातंत्र्योत्तर युग 106
समकालीन युग 107
रेखाचित्र 107
साहित्य में रेखाचित्र 107
रेखाचित्र का स्वरूप 107
आत्मकथा और संस्मरण से भिन्न 107
रेखाचित्र की विशेषता 107
विषय और शैली 108
हिंदी में रेखाचित्र 108
रिपोर्ताज 108
हिन्दी रिपोर्ताज का इतिहास 108
आरंभिक युग 108
स्वातंत्र्योत्तर युग 108
आत्मकथा 109
आरंभिक–युग 109
स्वतंत्रता–पूर्व युग 109
स्वातंत्र्योत्तर युग 110
जीवनी का उद्भव एवं विकास 110
जीवनी की परिभाषा 111
जीवनी के अपेक्षित गुण 111
प्रमुख कवियों, कहानीकारों, उपन्यासकारों, नाटककारों, आलोचकों की रचनाओं का सामान्य परिचय 111
आलोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक 111
सूरदास के पद : भ्रमरगीत 150
तुलसीदास/रामचरितमानस/अयोध्या काण्ड 157
बिहारी 165
कृतियाँ 166
टीकाएँ 167
काव्यगत विशेषताएं 167
भाषा 168
शैली 168
रस 168
छंद 168
अलंकार 168

Develop India Group

साहित्य में स्थान 168
जगन्नाथदास रत्नाकर 168
रत्नाकर जी की रचनाएँ 169
काव्यागत विशेषताएँ 169
समालोचना 170
जयशंकर प्रसाद/कामायनी 170
श्रद्धा सर्ग 172
चिंता 174
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' /राम की शक्ति पूजा 177
राम की शक्ति पूजा की व्याख्या 181
सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय/कितनी नावों में कितनी बार 183
रामधारी सिंह 'दिनकर'/कुरूक्षेत्र 185
प्रथम सर्ग 185
गजानन माधव मुक्तिबोध/अंधेरे में 188
भाग – 1 188
भारतेंदु हरिश्चंद्र : भारतदुर्दशा 189
जयशंकर प्रसाद : चन्द्रगुप्त 190
मोहन राकेश : आधे अधूरे 191
पात्र 191
विशेषताएं 191
प्रेमचन्द : गोदान 191
उपन्यास का सारांश 191
कथानक 192
फणीश्वरनाथ 'रेणु' : मैला आँचल 192
कथानक 193
श्रीलाल शुक्ल : रागदरबारी 193
पात्र 193
कहानी / प्रेमचंद / कफन 193
कहानी / प्रेमचंद / बूढ़ी काकी 198
कहानी / प्रेमचंद / नमक का दारोगा 202
जैनेन्द्र कुमार : पाजेब (कथा–कहानी) 205
जयशंकर प्रसाद : गुंडा 214
यशपाल : अभिशप्त 219
कृतियाँ 221
भीष्म साहनी : चीफ की दावत 221
उषा प्रियंवदा की कहानी– वापसी 226
ज्ञानरंजन : पिता 230
ओम प्रकाश वाल्मीकि : यह अंत नहीं 233
यह अंत नहीं 234
ओम प्रकाश वाल्मीकि जी की कुछ चुनिंदा रचनाएं 234
पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी : "उसने कहा था" 237
"उसने कहा था" 238

Develop India Group

हिन्दी भाषा का इतिहास

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही *'पद्य'* रचना प्रारम्भ हो गयी थी। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था *'अवहट्ट'* से हिन्दी का उद्‌भव स्वीकार करते हैं। **चन्द्रधर शर्मा** *'गुलेरी'* ने इसी अवहट्ट को *'पुरानी हिन्दी'* नाम दिया।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, श्रृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य–रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना–परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने *'देसी भाषा'* कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में *'हिन्दी'* शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था।

हिन्दी साहित्य पर यदि समुचित परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यंत विस्तृत व प्राचीन है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ० हरदेव बाहरी के शब्दों में, हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरम्भ होता है। यह कहना ही ठीक होगा कि वैदिक भाषा ही हिन्दी है। इस भाषा का दुर्भाग्य रहा है कि युग–युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा है। कभी 'वैदिक', कभी 'संस्कृत', कभी 'प्राकृत', कभी 'अपभ्रंश' और अब – हिन्दी।

(1) आलोचक कह सकते हैं कि 'वैदिक संस्कृत' और 'हिन्दी' में तो जमीन–आसमान का अन्तर है। पर ध्यान देने योग्य है कि हिब्रू, रूसी, चीनी, जर्मन और तमिल आदि जिन भाषाओं को 'बहुत पुरानी' बताया जाता है, उनके भी प्राचीन और वर्तमान रूपों में जमीन–आसमान का अन्तर है; पर लोगों ने उन भाषाओं के नाम नहीं बदले और उनके परिवर्तित स्वरूपों को 'प्राचीन', 'मध्यकालीन', 'आधुनिक' आदि कहा गया, जबकि 'हिन्दी' के सन्दर्भ में प्रत्येक युग की भाषा का नया नाम रखा जाता रहा।

(2) हिन्दी भाषा के उद्‌भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं पर विचार करते समय हमारे सामने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न दसवीं शताब्दी के आसपास की प्राकृताभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गये हैं उन पर विचार करना भी आवश्यक है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश–अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही पद्य–रचना प्रारम्भ हो गयी थी।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, श्रृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य–रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना–परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या 'प्राकृताभास हिन्दी' में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देसी भाषा कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में हिन्दी शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखन

हिन्दी के आरंभिक काल से लेकर आधुनिक व आज की भाषा में आधुनिकोत्तर काल तक साहित्य इतिहास लेखकों के शताधिक नाम गिनाये जा सकते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास को शब्दबद्ध करने का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण था। हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन का कार्य विभिन्न कालों में किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है।

आरंभिक काल में मात्र कवियों के सूची संग्रह को इतिहास रूप में प्रस्तुत कर दिया गया। भक्तमाल आदि ग्रन्थों में यदि भक्त कवियों का विवरण दिया भी गया तो धार्मिक दृष्टिकोण तथा श्रद्धातिरेक की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त उसकी और कुछ उपलब्धि नहीं रही। 19वीं सदी में ही हिन्दी भाषा और साहित्य दोनों के विकास की रूपरेखा स्पष्ट करने के प्रयास होने लगे। प्रारंभ में निबंधों में भाषा और साहित्य का मूल्यांकन किया गया

Develop India Group

जिसे एक अर्थ में साहित्य के इतिहास की प्रस्तुति के रूप में भी स्वीकार किया गया। डॉ॰ रूपचंद पारीक, गार्सा–द–तासी के ग्रन्थ इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐन्दूई ऐन्दूस्तानी को हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास मानते हैं। उन्होंने लिखा है – हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास लेखक गार्सा–द–तासी हैं, इसमें संदेह नहीं है। परंतु डॉ॰ किशोरीलाल गुप्त का मंतव्य है– तासी ने अपने ग्रन्थ को 'हिन्दुई और हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' कहा है, पर यह इतिहास नहीं हैं, क्योंकि इसमें न तो कवियों का विवरण काल क्रमानुसार दिया गया है, न काल विभाग किया गया है और अब काल विभाग ही नहीं है तो प्रवृत्ति निरूपण की आशा ही कैसे की जा सकती है।

वैसे तासी और सरोज को हिन्दी साहित्य का प्रथम और द्वितीय इतिहास मानने वालों की संख्या अल्प नहीं है परंतु डॉ॰ गुप्त का विचार है कि ग्रियर्सन का द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। डॉ॰ रामकुमार वर्मा ने इसके विपरीत अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति की दृष्टि से तासी के प्रयास को अधिक महत्वपूर्ण निरूपित किया है।

पाश्चात्य और प्राच्य विद्वानों ने हिन्दी के इतिहास लेखन के आरंभिक काल में प्रशंसनीय भूमिका निभाई है। शिवसिंह सरोज साहित्य इतिहास लेखन के अनन्य सूत्र हैं। हिन्दी के वे पहले विद्वान हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य की परंपरा के सातत्य पर समदृष्टि डाली है। अनन्तर मिश्र बंधुओं ने साहित्यिक इतिहास तथा राजनीतिक परिस्थितियों के पारस्परिक संबंधों का दर्शन कराया। डॉ॰ सुमन राजे के शब्दों में – काल विभाजन की दृष्टि से भी विश्वबंधु विनोद प्रगति की दिशा में बढ़ता दिखाई देता है।

मध्ययुगीन हिंदी में भक्ति आन्दोलन में हिन्दी खूब फली फूली। पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन–जन तक पहुंचाने के लिये हिन्दी का सहारा लिया।

नया युग

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास लिखकर एक नये युग का समारंभ किया। उन्होंने लोकमंगल व लोक–धर्म की कसौटी पर कवियों और कवि–कर्म की परख की और लोक चेतना की दृष्टि से उनके साहित्यिक अवदान की समीक्षा की। यहीं से काल विभाजन और साहित्य इतिहास के नामकरण की सुदृढ़ परंपरा का आरंभ हुआ। इस युग में डॉ॰ श्याम सुन्दर दास, रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', सूर्यकांत शास्त्री, अयोध्या सिंह उपाध्याय, डॉ॰ रामकुमार वर्मा, राजनाथ शर्मा प्रभृति विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास विषयक ग्रन्थों का प्रणयन कर स्तुत्य योगदान दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शुक्ल युग के इतिहास लेखन के अभावों का गहराई से अध्ययन किया और हिन्दी साहित्य की भूमिका (1940 ई.), हिन्दी साहित्य का आदिकाल (1952 ई.) और हिन्दी साहित्य; उद्भव और विकास (1955 ई.) आदि ग्रन्थ लिखकर उस अभाव की पूर्ति की। काल विभाजन में उन्होंने कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। शैली की समग्रता उनकी अलग विशेषता है।

आधुनिक काल

वर्तमान युग में आचार्य द्विवेदी के अतिरिक्त साहित्येतिहास लेखन में अन्य प्रयास भी हुए परंतु इस दिशा में विकास को अपेक्षित गति नहीं मिल पाई। वैसे डॉ॰ गणपति चंद्र गुप्त, डॉ॰ रामखेलावन पांडेय के अतिरिक्त डॉ॰ लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, डॉ॰ कृष्णलाल, भोलानाथ तथा डॉ॰ शिवकुमार की कृतियों के अतिरिक्त काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं डॉ नगेन्द्र के संपादन में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास आधुनिक युग की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं। हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने भी हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन की भूमिका लिखकर साहित्य के इतिहास और उसके प्रति दार्शनिक दृष्टि को नये ढंग से रेखांकित किया है।

स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी

भारत के स्वतन्त्र होने पर हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।

इंटरनेट युग में हिन्दी

हिंदी भाषा की जितनी मांग है, इंटरनेट पर उतनी उपलब्धता नहीं है। लेकिन जिस रफ़्तार से भारत में इंटरनेट का विकास हुआ है उसी तरह से हिंदी भी इंटरनेट पे छा रही है। समाचारपत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। साधुवाद तो गूगल को भी जाता है जिसने हिंदी में खोज करने की जगह उपलब्ध कराई। इतना ही नहीं विकिपीडिया ने भी हिंदी की महत्ता को समझते हुए कई सारी सामग्री का सॉफ्टवेयर अनुवाद हिंदी में प्रदान करना शुरू कर दिया जिससे हिंदी भाषी को किसी भी विषय की जानकरी सुलभ हुई। आजकल हिंदी भी इंटरनेट की एक अहम् लोकप्रिय भाषा बन कर उभरी है। मेरा मानना है जब लोग अपने विचार और लेखन हिंदी भाषा में इंटरनेट पर ज्यादा करेंगे तो वह दिन दूर नहीं की सारी सामग्री हिंदी में भी इंटरनेट पर मिलने लगेगी।

हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल

हिन्दी साहित्य का आरंभ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट् हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे छोटे शासनकेन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। विदेशी मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। धार्मिक क्षेत्र अस्तव्यस्त थे।

Develop India Group